

आदिवासी परिवारों के आर्थिक विकास में लघु वनोपज की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन : सीधी जिले के कुसमी तहसील के विशेष संदर्भ में

ममता देवी प्रजापति¹, डॉ. आर. पी. सिंह²

¹शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.)

²प्राध्यापक भूगोल, संजय गान्धी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी (म.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र सीधी जिले के कुसमी तहसील में आदिवासी परिवारों के आर्थिक विकास में लघु वनोपज की भूमिका के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर केन्द्रित है। शोध कार्य हेतु 100 आदिवासी परिवारों से प्राथमिक आकड़े संरचित प्रश्नावली के माध्यम से संकलित किये गये हैं। आर्थिक विकास में लघु वनोपज की भूमिका का अध्ययन चार संकेतकों—लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय, वार्षिक बचत, प्राप्त रोजगार दिवस एवं ऋणग्रस्तता में कमी के आधार पर किया गया है। अध्ययन में पूर्व निर्मित परिकल्पनाओं की जाँच हेतु कार्ड वर्ग परीक्षण एवं स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध का प्रयोग किया गया है। स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक के द्वारा लघु वनोपज से प्राप्त आय तथा परिवार की कुल वार्षिक आय, वार्षिक बचत एवं रोजगार-दिवसों के मध्य धनात्मक एवं मजबूत सह-संबंध पाया गया। वहीं कार्ड-वर्ग परीक्षण के परिणामों से भी यह स्पष्ट हुआ कि लघु वनोपज संग्रहण एवं आदिवासी परिवारों की ऋणग्रस्तता में कमी के मध्य महत्वपूर्ण संबंध है। अतः लघु वनोपज आदिवासी परिवारों की आय एवं बचत बढ़ाने, रोजगार के अवसरों को सुदृढ़ करने तथा ऋणग्रस्तता कम करने के माध्यम से उनके आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

मुख्य शब्द लघु वनोपज, आदिवासी परिवार, आर्थिक विकास, वार्षिक आय, बचत, रोजगार, ऋणग्रस्तता, कुसमी तहसील, स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध, कार्ड-वर्ग परीक्षण।

प्रस्तावना:

भारत के वन क्षेत्रों में निवास करने वाले आदिवासी परिवारों का जीवन जंगल और उससे प्राप्त संसाधनों से गहराई से जुड़ा हुआ है। लघु वनोपज उनके लिए केवल प्राकृतिक उत्पाद नहीं, बल्कि भोजन, औषधि, घरेलू उपयोग और नकद आय का महत्वपूर्ण साधन है। महुआ, तेंदूपत्ता, साल बीज, इमली, शहद, गोंद, चिरौंजी तथा विभिन्न औषधीय पौधों का संग्रहण परिवारों को वर्ष के अलग-अलग मौसमों में रोजगार उपलब्ध कराता है। इन उत्पादों का एक भाग परिवार स्वयं उपयोग करता है, जबकि शेष स्थानीय बाजारों में बेचकर प्राप्त आय का उपयोग दैनिक आवश्यकताओं, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि कार्यों और ऋण भुगतान में किया जाता है।

सीधी जिले की कुसमी तहसील में पर्याप्त वन क्षेत्र और आदिवासी आबादी होने के कारण लघु वनोपज का आर्थिक महत्व विशेष रूप से दिखाई देता है। संग्रहण कार्य में परिवार के पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की भागीदारी रहती है। विशेष रूप से महिलाएँ महुआ, इमली, शहद और औषधीय पौधों के संग्रहण, सफाई, सुखाने तथा प्राथमिक प्रसंस्करण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इससे न केवल परिवार की आय में वृद्धि होती है, बल्कि महिलाओं की आर्थिक भूमिका और निर्णय-क्षमता भी सुदृढ़ होती है। इसके बावजूद लघु वनोपज-आधारित अर्थव्यवस्था अनेक समस्याओं से प्रभावित है। संग्रहकर्ताओं को बाजार संबंधी सीमित जानकारी, परिवहन की कठिनाइयों, भंडारण सुविधाओं के अभाव, मूल्य निर्धारण में असमानता और बिचौलियों पर निर्भरता के कारण अपनी उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। कई बार

उत्पादों के शीघ्र खराब होने की संभावना के कारण उन्हें कम कीमत पर बेचने के लिए विवश होना पड़ता है। परिणामस्वरूप लघु वनोपज से प्राप्त संभावित आय वास्तविक आय की तुलना में कम रह जाती है।

अध्ययन क्षेत्र :

कुसमी तहसील मध्य प्रदेश के सीधी जिले के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित एक प्रमुख ग्रामीण एवं जनजातीय क्षेत्र है। प्रशासनिक दृष्टि से यह सीधी जिले के प्रमुख तहसीली क्षेत्रों में शामिल है। क्षेत्र की भौगोलिक संरचना, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता तथा जनजातीय जनसंख्या की उल्लेखनीय उपस्थिति इसे सामाजिक-आर्थिक अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण बनाती है। विशेष रूप से यहाँ के वन संसाधन स्थानीय जनजीवन एवं आजीविका के साथ निकटता से जुड़े हुए हैं, जिसके कारण कुसमी तहसील लघु वनोपज आधारित आजीविका के अध्ययन के लिए उपयुक्त क्षेत्र है। यहाँ की जलवायु उष्णकटिबंधीय मानसूनी है। ग्रीष्म ऋतु सामान्यतः गर्म तथा शीत ऋतु अपेक्षाकृत ठंडी होती है, जबकि वर्षा का अधिकांश भाग दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्राप्त होता है। वर्षा की मौसमी प्रकृति तथा तापमान में ऋतुवत परिवर्तन यहाँ की कृषि गतिविधियों, वनस्पति के विकास और स्थानीय आजीविका को प्रभावित करते हैं। मानसूनी वर्षा के कारण क्षेत्र में वनस्पति के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ निर्मित होती हैं तथा वन संसाधनों की उपलब्धता बनी रहती है। यहाँ की ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, मजदूरी, वन संसाधनों तथा लघु वनोपज पर आधारित है। क्षेत्र के अनेक आदिवासी परिवार अपनी दैनिक आवश्यकताओं एवं आय की पूर्ति के लिए कृषि कार्यों के साथ-साथ आसपास के वन क्षेत्रों से विभिन्न प्रकार की लघु वनोपज जैसे— महुआ, बैर, बरारी, तेंदू पत्ता, पुट्टू, जड़ी-बूटी, जलाऊ लकड़ी आदि का संग्रहण करते हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार कुसमी तहसील की कुल जनसंख्या 81,259 है, जिसमें 41,249 पुरुष (50.76प्रतिशत) तथा 40,010 महिलाएँ (49.24प्रतिशत) शामिल हैं। कुल जनसंख्या का 40,236 व्यक्ति (49.52प्रतिशत) कार्यशील तथा 41,023 व्यक्ति (50.48प्रतिशत) गैर-कार्यशील है। इससे स्पष्ट होता है कि तहसील में कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग आर्थिक गतिविधियों में संलग्न था, जबकि आधे से थोड़ा अधिक भाग गैर-कार्यशील जनसंख्या के रूप में दर्ज है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य सीधी जिले के कुसमी तहसील में आदिवासी परिवारों के आर्थिक विकास में लघु वनोपज की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इस मुख्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नांकित विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं—

1. लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय तथा परिवार की कुल औसत वार्षिक आय के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
2. लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय तथा आदिवासी परिवारों की वार्षिक बचत के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
3. लघु वनोपज से प्राप्त आय तथा उससे उपलब्ध रोजगार के बीच संबंध का अध्ययन करना।
4. लघु वनोपज संग्रहण से आदिवासी परिवारों की ऋणग्रस्तता में आयी कमी का अध्ययन एवं विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ :

1. शून्य परिकल्पना— लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय तथा परिवार की कुल औसत वार्षिक आय के मध्य कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।
वैकल्पिक परिकल्पना— लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय तथा परिवार की कुल औसत वार्षिक आय के मध्य महत्वपूर्ण धनात्मक संबंध है।
2. शून्य परिकल्पना— लघु वनोपज आय और वार्षिक बचत के बीच कोई संबंध नहीं है।
वैकल्पिक परिकल्पना— लघु वनोपज आय और वार्षिक बचत के बीच धनात्मक संबंध है।
3. शून्य परिकल्पना—लघु वनोपज आय और रोजगार-दिवसों के बीच कोई संबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना— लघु वनोपज आय और रोजगार—दिवसों के बीच धनात्मक संबंध है।

4. शून्य परिकल्पना—लघु वनोपज संग्रहण से आदिवासी परिवारों की ऋणग्रस्तता में कोई महत्वपूर्ण कमी नहीं आयी है।

वैकल्पिक परिकल्पना— लघु वनोपज संग्रहण से आदिवासी परिवारों की ऋणग्रस्तता में महत्वपूर्ण कमी आयी है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक एवं परीक्षणात्मक प्रकृति का है। शोध आलेख में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों आकड़ों का उपयोग हुआ है।

1. **निदर्शन प्रारूप**— अध्ययन क्षेत्र से निदर्शन के रूप में 100 आदिवासी परिवारों का चयन इस प्रकार से किया गया है कि वह सम्पूर्ण समग्र का प्रतिनिधित्व कर सके। निदर्शन में केवल उन्हीं परिवारों को शामिल किया है जिनके घर से कम-से-कम एक सदस्य लघु वनोपज संग्रहण में संलग्न रहा है।
2. **आकड़ों के संग्रहण की तकनीक**— प्राथमिक आकड़े संरचित प्रश्नावली के माध्यम से संकलित किये गये हैं। प्रश्नावली में आदिवासी परिवार की लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय, वार्षिक बचत, प्राप्त रोजगार दिवस एवं ऋणग्रस्तता में कमी से संबंधित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है। जबकि द्वितीयक आकड़े जिला जनगणना पुस्तिका से संकलित किये गये हैं।
3. **सांख्यिकीय उपकरण**—अध्ययन से संबंधित पूर्व निर्मित परिकल्पनाओं के सत्यता की जाँच हेतु प्राथमिक आकड़ों का विश्लेषण स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध तथा कार्ई-वर्ग परीक्षण द्वारा परिणाम निकालकर की गई है।

$$1. \text{ स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक } R_s = 1 - \frac{6\sum d^2}{n(n^2-1)}$$

$$2. \text{ कार्ई वर्ग परीक्षण } \chi^2 = \frac{\sum (f_o - f_e)^2}{f_e}$$

जहाँ— f_o अवलोकित आवृत्ति

f_e प्रत्याशित आवृत्ति

आकड़ों का सांख्यिकीय परीक्षण एवं परिकल्पनाओं की पुष्टि :

लघु वनोपज संग्रहित करने वाले चयनित सभी 100 आदिवासी परिवारों से आर्थिक विकास से संबंधित प्राथमिक आकड़े संकलित किये गए हैं। इन आकड़ों का विश्लेषण, व्याख्या एवं परिकल्पनाओं की पुष्टि इस प्रकार से है—

तालिका 1

परिवारों की वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय एवं औसत कुल वार्षिक आय

वनोपज से वार्षिक आय वर्ग	परिवार की संख्या	कुल वार्षिक आय का औसत
5,000 से कम	12	48,500
5,000—10,000	18	65,300
10,000—20,000	20	79,700
20,000—30,000	25	1,12,375
30,000—40,000	15	98,800
40,000 से अधिक	10	1,05,000
	N= 100	

स्रोत : सर्वेक्षित प्राथमिक आकड़े, (2026)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन में शामिल 100 परिवारों में सबसे अधिक 25 प्रतिशत परिवारों को लघु वनोपज से 20,000–30,000 रुपये वार्षिक आय प्राप्त होती है। जबकि 50 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जिनकी लघु वनोपज से वार्षिक आय 20,000 रुपये से अधिक है। दूसरी ओर, 12 प्रतिशत परिवारों की आय 5,000 रुपये से कम है, जिससे पता चलता है कि परिवारों में लघु वनोपज से प्राप्त आय का स्तर एक समान नहीं है।

वहीं परिवार की कुल वार्षिक आय के औसत से भी यह स्पष्ट होता है कि जिन परिवारों को लघु वनोपज से अपेक्षाकृत अधिक आय प्राप्त हुयी है, उनकी कुल आय सामान्यतः अधिक है। 5,000 रुपये से कम लघु वनोपज आय वाले परिवारों की औसत कुल वार्षिक आय 48,500 रुपये है, जबकि 20,000–30,000 रुपये आय वर्ग में यह 1,12,375 रुपये तक पहुँच जाती है। हालांकि ऊँचे आय-वर्गों में कुछ उतार-चढ़ाव दिखाई देता है, फिर भी समग्र रूप से दोनों आयों में धनात्मक संबंध की प्रवृत्ति स्पष्ट होती है। लघु वनोपज से प्राप्त आय तथा परिवार की कुल वार्षिक आय के मध्य संबंध की स्पष्टता के लिए स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक की गणना तालिका 2 में प्रस्तुत की गई है।

तालिका 2

वनोपज से वार्षिक आय एवं कुल आय के मध्य स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक की गणना

वनोपज से वार्षिक आय वर्ग (X)	कुल वार्षिक आय का औसत (Y)	X की रैंक	Y की रैंक	d=X-Y	d ²	$R_s = 1 - \frac{6 \sum d^2}{n(n^2-1)}$
5,000 से कम	48,500	1	1	0	0	
5,000–10,000	65,300	2	2	0	0	
10,000–20,000	79,700	3	3	0	0	
20,000–30,000	1,12,375	4	6	-2	4	
30,000–40,000	98,800	5	4	1	1	
40,000 से अधिक	1,05,000	6	5	1	1	
N = 6					$\sum d^2 = 6$	$R_s = +0.829$

स्रोत : सर्वेक्षित प्राथमिक आकड़े, (2026)

उपरोक्त तालिका में लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय तथा परिवार की औसत कुल वार्षिक आय के मध्य स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक +0.829 प्राप्त हुआ है अतः “लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय तथा परिवार की कुल वार्षिक आय के मध्य धनात्मक संबंध है” वाली वैकल्पिक परिकल्पना की पुष्टि होती है तथा शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में लघु वनोपज से प्राप्त आय आदिवासी परिवारों की कुल आय एवं आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

तालिका 3

वनोपज से वार्षिक आय एवं बचत के मध्य स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक की गणना

वनोपज से वार्षिक आय वर्ग (X)	कुल वार्षिक बचत का औसत (Y)	X की रैंक	Y की रैंक	d=X-Y	d ²	$R_s = 1 - \frac{6 \sum d^2}{n(n^2-1)}$
5,000 से कम	3,800	1	1	0	0	
5,000—10,000	7,700	2	2	0	0	
10,000—20,000	14,600	3	3	0	0	
20,000—30,000	24,375	4	5	-1	1	
30,000—40,000	18,800	5	4	1	1	
40,000 से अधिक	26,100	6	6	0	0	
N = 6					$\sum d^2 = 2$	$R_s = +0.943$

स्रोत : सर्वेक्षित प्राथमिक आकड़े, (2026)

लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय और आदिवासी परिवारों की औसत वार्षिक बचत के बीच क्रमिक संबंध की जाँच के लिए उपरोक्त तालिका में स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध का प्रयोग किया गया है। प्राप्त $R_s = +0.943$ का मान दोनों के बीच अत्यंत मजबूत धनात्मक क्रमिक संबंध को दर्शाता है। अर्थात् जिन परिवारों को लघु वनोपज से अधिक आय प्राप्त होती है, उनमें सामान्यतः बचत करने की क्षमता भी अधिक पाई जाती है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका 4

वनोपज से वार्षिक आय एवं रोजगार दिवस के मध्य स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक की गणना

वनोपज से वार्षिक आय वर्ग (X)	कुल वार्षिक रोजगार दिवस का औसत (Y)	X की रैंक	Y की रैंक	d=X-Y	d ²	$R_s = 1 - \frac{6 \sum d^2}{n(n^2-1)}$
5,000 से कम	60	1	1	0	0	
5,000—10,000	95	2	2	0	0	
10,000—20,000	140	3	3	0	0	
20,000—30,000	180	4	4	0	0	
30,000—40,000	190	5	6	-1	1	
40,000 से अधिक	185	6	5	1	1	
N = 6					$\sum d^2 = 2$	$R_s = +0.943$

स्रोत : सर्वेक्षित प्राथमिक आकड़े, (2026)

तालिका में आदिवासी परिवारों को लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय तथा औसत वार्षिक रोजगार-दिवसों के मध्य स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक $R_s=+0.943$ प्राप्त हुआ, जो दोनों के बीच अत्यंत मजबूत धनात्मक क्रमिक संबंध को दर्शाता है। अर्थात् लघु वनोपज से प्राप्त आय के स्तर में वृद्धि के साथ सामान्यतः रोजगार-दिवसों में भी वृद्धि पाई जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि लघु वनोपज आदिवासी परिवारों के लिए आय के साथ-साथ रोजगार का भी महत्वपूर्ण आधार है। इस आधार पर “लघु वनोपज आय और रोजगार-दिवसों के बीच धनात्मक क्रमिक संबंध है” वाली वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

तालिका 5

लघु वनोपज संग्रहण से ऋणग्रस्तता में कमी के संबंध में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया का कार्ई-वर्ग परीक्षण

प्रतिक्रिया वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या (fo)	अपेक्षित संख्या (fe)	fo - fe	(fo - fe) ²	$x^2 = \frac{\sum (fo - fe)^2}{fe}$
हाँ	65	33.33	31.67	1002.89	30.09
नहीं	20	33.33	-13.33	177.69	5.33
अनिश्चित	15	33.33	-18.33	335.89	10.08
कुल	100	100	—	—	$x^2 = 45.5$

स्रोत : सर्वेक्षित प्राथमिक आकड़े, (2026)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन किए गए 100 आदिवासी परिवारों में 65 परिवारों ने माना कि लघु वनोपज संग्रहण से उनकी ऋणग्रस्तता में कमी आई है, 20 परिवारों ने कमी से इनकार किया, जबकि 15 परिवारों ने इस संबंध में अनिश्चित प्रतिक्रिया दी। प्रतिक्रियाओं के वितरण की जाँच हेतु कार्ई-वर्ग परीक्षण किया गया, जिसमें परिकलित $x^2=45.5$ प्राप्त हुआ, जो $df=2$ के लिए 0.1 सार्थकता स्तर पर सारणीबद्ध मान 9.210 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकार तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि लघु वनोपज संग्रहण से आदिवासी परिवारों की ऋणग्रस्तता में महत्वपूर्ण कमी हुई है। व्यावहारिक रूप से, लघु वनोपज से प्राप्त आय परिवारों को ऋण की अदायगी में सहायता प्रदान करती है और उनकी ऋण पर निर्भरता कम करने में योगदान देती है।

निष्कर्ष एवं सुझाव :

अध्ययन क्षेत्र में लघु वनोपज से प्राप्त वार्षिक आय तथा परिवार की औसत कुल वार्षिक आय के मध्य स्पीयरमैन रैंक सह-संबंध गुणांक $R_s=+0.829$ प्राप्त हुआ, जो दोनों के मध्य उच्च धनात्मक संबंध को दर्शाता है। इसी प्रकार, लघु वनोपज से प्राप्त आय एवं परिवारों की औसत वार्षिक बचत के मध्य $R_s=+0.943$ तथा लघु वनोपज से प्राप्त आय एवं औसत वार्षिक रोजगार-दिवसों के मध्य भी $R_s=+0.943$ का अत्यंत मजबूत धनात्मक सह-संबंध पाया गया। इससे संकेत मिलता है कि लघु वनोपज से होने वाली आय में वृद्धि के साथ परिवारों की बचत तथा रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त, लघु वनोपज संग्रहण से ऋणग्रस्तता में कमी के संबंध में उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया के कार्ई-वर्ग परीक्षण से स्पष्ट है कि वनोपज से ऋणग्रस्तता में कमी आयी है। अतः लघु वनोपज आदिवासी परिवारों की आय एवं बचत में वृद्धि, रोजगार के अवसरों के विस्तार तथा ऋणग्रस्तता में कमी के माध्यम से उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

लघु वनोपज संग्रहित करने वाले आदिवासी परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार से संबंधित सरकार एवं प्रशासन द्वारा निम्नांकित कदम उठाए जाने चाहिए—

1. लघु वनोपज संग्रहकर्ताओं को उनकी उपज का उचित एवं लाभकारी मूल्य सुनिश्चित किया जाना चाहिए, ताकि आय में वृद्धि हो सके।
2. बिचौलियों पर निर्भरता कम करने के लिए आदिवासी परिवारों को सहकारी समितियों, वन समितियों एवं अन्य संगठित विपणन संस्थाओं से जोड़ा जाना चाहिए।
3. लघु वनोपज के सुरक्षित भंडारण के लिए गाँव अथवा स्थानीय स्तर पर उपयुक्त गोदाम एवं संग्रहण केंद्र विकसित किए जाने चाहिए, ताकि परिवारों को तत्काल कम कीमत पर उपज बेचने की मजबूरी न हो।
4. महुआ, तेंदूपत्ता, हर्रा, बहेरा, आँवला आदि लघु वनोपज के स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन की इकाइयाँ स्थापित की जानी चाहिए, जिससे कच्ची उपज के बजाय प्रसंस्कृत उत्पाद से अधिक आय प्राप्त हो सके।
5. लघु वनोपज आधारित गतिविधियों को स्थानीय रोजगार से जोड़ा जाए तथा संग्रहण, प्रसंस्करण, पैकेजिंग और विपणन में आदिवासी परिवारों की भागीदारी बढ़ाई जाए।

संदर्भ (Reference)-

1. Kankate, Jayshri R., R. G. Deshmukh, and Rushikesh K. Patil, Marketing Systems of Minor Forest Products and Identification of Constraints Faced by Tribals for Marketing of Minor Forest Product, International Journal of Current Microbiology and Applied Sciences, (2020) 9(12) : 960–965
2. Keshri, Kunal, and R. B. Bhagat, Temporary and Seasonal Migration: Regional Pattern, Characteristics and Associated Factors, Economic and Political Weekly, (2012) 47(4) : 81–88.
3. Kumar, Sandeep, and G. L. Meena, Employment and Income Generated and Marketing of Minor Forest Produce in Udaipur District of Rajasthan, Indian Journal of Agricultural Marketing, (2018) 32, (2) : 9–20
4. Mishra, Manish, and Mukta Shrivastava, Trade of Minor Forest Products in the Rural Markets of Central India, Biological Forum – An International Journal, (2015) 7(2) : 516–521
5. Pargi, Geeta M., How Minor Forest Produces Helpful in the Economic Development of Tribals, International Journal of Creative Research Thoughts, (2023), 11(9), 2023 : b795-b807
6. Saboo, Shalini, Value Addition to Minor Forest Produce: Gateway to Economic Empowerment of Jharkhand Tribals, Indian Journal of Public Administration, (2019), 65 (1) : 189–200
7. Shankar, S. Bhavani, Marketing Facilitation for Improving Livelihoods of Tribal Producers, International Journal of Rural Management, (2014), 10(2) : 93–120
8. Yadav, Sushma, and Anjana Uike, Impact of Covid-19 on Minor Forest Produce and Schedule Tribes Economy of Madhya Pradesh, International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research, (2024), 11(1) : d687–d692.
9. गुप्ता, एस. पी. (2013), अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
10. चौहान, अनसिंह, एवं भारती कुमार, जनजातीय जीवन में वनोपजों की आर्थिक महत्ता—एक अध्ययन, अनुसंधान (विज्ञान शोध पत्रिका), (2020), 8(1) : 53–59
11. जिला जनगणना पुस्तिका सीधी, पार्ट XII-B (2011)
12. बीजू राम, एवं सुनील कुमार कुमेटी, छत्तीसगढ़ के कोण्डागांव जिला में लघु वनोपजों का जनजातीय विकास में योगदान, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांसेड इन सोशल साइंसेज, (2024) 12 (4) : 183–187
13. सिंह, सुचेता, आर्थिक विकास में लघु वनोपज के योगदान का आर्थिक विश्लेषण (सिंगरौली जिले के विशेष संदर्भ में), आयुषी इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल (2019), VI (XII) : 155–158